VAISESIKA - UNIVERSALITY OR GENERALITY

वैशेषिक - सामान्य

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

वैशेषिक दर्शन का चौथा पदार्थ सामान्य है । सामान्य वह गुण है जिसके द्वारा बुद्धि वस्तुओं की एक बड़ी संख्या का एकीकरण करती है और उनका वर्ग बनाती है। सब मनुष्यों में मनुष्यत्व सामान्य रहता है। मनुष्य अनेक है जैसे राम ,श्याम, मोहन ,यदु आदि पर उनका मनुष्यत्व एक ही है। सामान्य नित्य है। मनुष्य पैदा होते हैं और मरते रहते हैं लेकिन मनुष्यत्व सदैव रहता है एक मनुष्य में जो मनुष्यत्व है दूसरे मनुष्य में भी वही मनुष्यत्व है ।उसी तरह सभी गायों गोत्व सामान्य रहता है।

सामान्य के संबंध में भारतीय विचारधारा में तीन मत पाए जाते हैं - 1 नामवाद (Nominalism) 2 प्रत्ययवाद (Conceptualism) 3 वस्तुवाद (Realism)

नामवाद के अनुसार व्यक्ति से स्वतंत्र सामान्य की सत्ता नहीं है। इस मत के समर्थक बौद्ध दर्शन है और यह मत बतलाता है कि सामान्य एक नाम है जो व्यक्तियों का सर्वनिष्ठ धर्म ना होकर सिर्फ नाम मात्र है। गाय को गाय ककहलाने का कारण यह है कि वह अन्य जानवरों जैसे - घोड़ा ,हाथी ,भैंस आदि से भिन्न है। इस मत में सामान्य की सत्ता का निषेध हुआ है।

प्रत्ययवाद के अनुसार सामान्य प्रत्यय मात्र है। इस मत के पोषक जैन और अद्वैत वेदांत है। प्रत्यय का निर्माण व्यक्तियों के सर्वनिष्ठ आवश्यक धर्म के आधार पर होता है। यह मत के बतलाता है कि व्यक्ति और सामान्य अभिन्न है ।

वस्तुवाद के अनुसार सामान्य की स्वतंत्रत सत्ता है। न्याय वैशेषिक इस मत के समर्थक हैं ।सामान्य की विशेषताओं को व्यक्त करते हुए न्याय वैशेषिक में कहा गया है कि ,'नित्यमेकमनेकानुगतं सामान्यम'अर्थात सामान्य नित्य, एक और अनेक वस्तुओं में समाविष्ट है। सामान्य नित्य होता है, अविनाशी होता है ।मनुष्यों का जन्म एवम नाश होता है पर उनका सामान्य अविनाशी होता है ।एक मनुष्य में जो मनुष्यत्व है, दूसरों में भी वही मनुष्यत्व है।सभी गायों में गोत्व सामान्य रहता है।

एक सामान्य दूसरे सामान्य में नहीं रहता ।एक वर्ग के सब व्यक्तियों में एक ही सामान्य रहता है ।सब गायों के एक ही आवश्यक गुण होते हैं क्योंकि वही गोत्व उन सब में रहता है ।अगर दो या अधिक सामान्य उनमें रहते तो उनकी गुण अलग अलग वर्ग के और

परस्पर विरोधी होते। विशेष समवाय और अभाव का कोई सामान्य नहीं होता ।

सामान्य द्रव्य गुण और कर्म में रहता है घटत्व सब घड़ों में रहने वाला सामान्य है । रूपत्व, नील पीत इत्यादि सब रूपों में रहने वाला सामान्य है।कर्मत्व सब कर्मों में रहने वाला सामान्य है ।

अकेले व्यक्ति में भी सामान्य नहीं रहता चुकी आकाश एक ही है इसलिए उसका आकाशत्व सामान्य नहीं है ।संयोग कई द्रव्यों में रहता है चूँकि वह नित्य नहीं है इसलिए वह सामान्य नहीं है। आकाश का परिमाण आकाश की नित्यता के कारण नित्य है। लेकिन यह सामान्य नहीं है क्योंकि वह एक से अधिक व्यक्तियों में नहीं रहता ।अत्यन्ताभाव नित्य होता है और कई व्यक्तियों में रहता है ।चूँकि उसका उनसे समवाय नहीं होता इसलिए यह भी सामान्य नहीं है। इस प्रकार सामान्य को एक नित्य और कई व्यक्तियों में समवेत रहने वाला होना चाहिए।

सामान्य में सामान्य नहीं होता अगर ऐसा होता तो एक सामान्य में दूसरा, दूसरे में तीसरा और तीसरे में चौथा और इसी प्रकार अनंत सामान्य मानने पड़ेंगे। अतः अनावस्था दोष से बचने के लिए एक सामान्य में दूसरा सामान्य नहीं मानना पड़ेगा। सामान्य के भाग नहीं होते जिससे व्यक्तियों में उसकी भागशः वृत्ति नहीं हो सकती। जब व्यक्ति की उत्पत्ति होती है तभी उसका सामान्य से संबंध हो जाता है यद्यपि सामान्य नित्य होता है फिर भी उसका किसी व्यक्ति विशेष से संबंध तभी होता है जब वह व्यक्ति उत्पन्न होता है।

विस्तार या व्यापकता के दृष्टिकोण से सामान्य के तीन भेद किए गए हैं - 1पर 2 अपर 3 परापर । सबसे अधिक व्यापक सामान्य को पर, सबसे कम व्यापक सामान्य को अपर और बीच वाले सामान्य को परापर कहा जाता है। सत्ता सबकी अपेक्षा अधिक व्यापक होने के कारण परा जाती है।घटत्व केवल घटों में सीमित होने के कारण अपर सामान्य है द्रव्यत्व दोनों के बीच में होने के कारण परापर है ।यह घटत्व, पटत्व आदि की अपेक्षा पर और सत्ता की अपेक्षा अपर है।